130.

भारत की साक्षरता की प्रादेशिक विषमताएँ

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय & रश्मि पाण्डेय

[१]*सहा. प्राध्यापक वाणिज्य शासकीय महाविद्यालय, शंकरगढ़ जिला – बलरामपुर (छ०ग०)*

[२]*सहा. प्राध्यापक अर्थशास्त्र शासकीय महाविद्यालय, जिला – बलरामपुर (छ०ग०)*

प्रस्तुत शोध में भारत की जनगणना वर्ष १९५१–२०११ तक की साक्षरताा दर का अध्ययन किया गया है। तथा इन विभिन्न जनगणना वर्षो में भारत के पॉच अधिकतम और न्यूनतम साक्षर राज्य की स्थिति का अध्ययन किया है साथ ही राष्ट्रीय औसत से इसकी तुलना की गई है। इस अध्ययन में यह पाया गया है भारत की साक्षरता में प्रादेशिक स्तर पर काफी विषमताएँ है लेकिन सरकार के अथक प्रयासों एवं विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के कारण राष्ट्रीय औसत और न्यूनतम साक्षर राज्य के बीच साक्षरता दर में जो असमानता थी उसमें क्रमशः कमी पाई गई है।

साक्षरता मानव के विकास और सर्वांगीण उन्नति का मूल तत्व है। एक निरक्षर व्यक्ति स्व्यं का विकास नहीं कर सकता तो वह समाज या राष्ट्र के विकास में क्या योगदान देगा। स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में निरक्षर व्यक्तियों की बहुत अधिक संख्या थी। लेकिन सरकार के अथक प्रयासों से आज देश, हर एक व्यक्ति को शिक्षित करने की दिशा में बढ़ रहा है।

साक्षरता का अर्थ है – अक्षर का ज्ञान होना दूसरे शब्दों में पढ़ने लिखने की क्षमता का होना ही साक्षरता है। एक साक्षर व्यक्ति अपने अधिकारों का सही प्रयोग कर सकता है। तथा जनसामान्य के लिए उपलब्ध सुख सुविधाओं का लाभ उठा सकता है। इस दृष्टि से निरक्षरता एक बहुत बड़ा अभिशाप है। जो पूरे समाज एवं राष्ट्र को खत्म कर सकता है। इसलिए सरकार तथा समाज की ओर से देश के हर नागरिक को साक्षर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इक्कीसवीं सदी में यदी भारत का हर नागरिक साक्षर हो जाए तो यह हमारी महान उपलब्धि होगी।

साक्षरता दर – किसी देश अथवा राज्य की साक्षता दर वहॉ के कुल लोगों की जनसंख्या व पढ़े लिखे लोगों के अनुपात को कहा जाता है। अधिकांश यह प्रतिशत में दर्शाया जाता है।

$$\text{साक्षरता दर} = \frac{\text{शिक्षित जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

भारत की स्थिति :– आजादी के समय भारत की साक्षरता दर मात्र १२ प्रतिशत थी। जो वर्तमान में बढ़कर लगभग ७४ प्रतिशत हो गई परंतु अब भी भारत संसार की सामान्य साक्षरता दर ८४ प्रतिशत से बहुत पीछे है। भारत में संसार की सबसे अधिक अनपढ़ जनसंख्या निवास करती है। साथ ही भारत में साक्षरता के मामले में पुरूष और महिलाओं की स्थिति में काफी अंतर है। जहॉ पुरूषों की साक्षरता दर ८२.१४ हैं वहीं महिलाओं में इसका प्रतिशत केवल ६५.४६ है। महिलाओं में कम साक्षरता का कारण अधिक जनसंख्या, परिवार नियोजन की जानकारी में कमी गरीबी, रूढ़ीवादिता, लिंग भेदभाव, तथा ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्र में शैक्षिक सुविधाओं का अभाव है।

भारत में साक्षरता की स्थिति (जनगणना १९५१–२०११

प्रस्तुत तालिका में भारत की जनगणना १९५१ से २०११ तक भारत की साक्षरता दर एवं पॉच अधिकतम साक्षर राज्य एवं पॉच न्यूनतम साक्षर राज्य को लिया गया है।

तालिका

भारत में साक्षरता की स्थिति (जनगणना १९५१–२०११

जनगणना वर्ष	राष्ट्रीय औसत	अधिकतम पॉच साक्षर राज्य		न्यूनतम पॉच साक्षर राज्य	
		राज्य	साक्षर प्रतिशत	राज्य	साक्षर प्रतिशत
१९५१	१८.३३	केरल	४७.१८	राजस्थान	८.५
		मिजोरम	३१.१४	छत्तीसगढ़	९.४१
		महाराष्ट्र	२७.९१	नागालैण्ड	१०.५२
		पश्चिम बंगाल	२४.६१	उत्तर प्रदेश	१२.०२
		गोवा	२३.४८	मणिपुर	१२.५७
		केरल	५५.०८	अरूणाचल प्रदेश	७.१३
		मिजोरम	४४.०१	जम्मू काश्मीर	१२.९५

Research Journal of Arts, Management and Social Sciences
ISSN 0975-4083, Vol.- XV, Hindi-II, Year-VIII, Sept., 2016
Impact Factor 1.223 (IIFS)

स्वास्थ्य सूचकांक एवं छत्तीसगढ़

• रश्मि पाण्डेय

सारांश- स्वास्थ्य का अर्थ एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक स्वस्थता की स्थिति है। स्वास्थ्य जीवन के प्रत्येक जीवन के प्रत्येक पहलू पर मनुष्य को प्रमाणित करता है। केवल स्वस्थ्य मनुष्य ही धन कमा सकता है, जातीय, सामाजिक, नैतिक-वैयक्तिक और सब प्रकार के कर्तव्यों का पालन कर सकता है। अतः मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति तथा विकास के मापदण्ड के साथ ही साथ इस बात का भी संकेतक है कि मनुष्य कितने समय तक निर्माण कार्य में संलग्न रह सकता है। रूग्ण मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है। वह समाज एवं अर्थव्यवस्थाा पर बोझ रहता है। अतः हम कह सकते हैं मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति तथा विकास का आधार अच्छा स्वास्थ्य है। अच्छे स्वास्थ्य से श्रम की उत्पादकता में वृद्धि होती है। तथा इससे मानसिक योग्यता का विकास होता है। स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का निवास होता है।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं में काफी विकास हुआ। स्वास्थ्य सूचकों- जन्मदर, मृत्युदर, शिशु मृत्युदर, चिकित्सालयों की संख्या, स्वास्थ्य शिक्षा एवं अनुसंधान, पोषण-कार्यक्रम सभी क्षेत्रों में बहुत तेजी से सुधार हुआ है।

1. **छत्तीसगढ़ राज्य की मृत्य दर**- समाजिक एवं स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार के चलते मृत्युदर में कमी आयी है। 2000 से 2011 तक के छत्तीसगढ़ के मृत्यु दर के आंकड़ों का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट है कि इसमें संतोषजनक गिरावट आयी है। छ.ग. के ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें जहाँ 2000 में छ.ग. में मृत्यु दर 6.06 प्रति हजार थी जो 2011 में घटकर 4.83 प्रति हजार हो गई है। लेकिन यदि 2000 से 2011 तक छ.ग. के ग्रामीण क्षेत्र में मृत्यु दर की वृद्धि दर को देखें तो यह बात भी स्पष्ट होती है इसमें काफी उच्चावचन है। वर्ष 2001, 2003, 2005, 2007 को छोड़कर बाकि सभी वर्षों में ग्रामीण क्षेत्र में मृत्यदर गिरावट आई है। सबसे अधिक गिरावट वर्ष 2010 में दर्ज की गई है।

(1.1) ग्रामीण क्षेत्र में छ.ग. राज्य की मृत्यु दर वर्ष 2000-2011 तक

वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011
छत्तीसगढ़ की मृत्यु दर	6.06	7.15	7.09	7.17	6.04	6.45	6.03	6.63	6.16	6.98	4.85	4.83

स्रोत - छ.ग. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

★ सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, शासकीय नवीन महाविद्यालय, शंकरगढ़, जिला-बलरामपुर

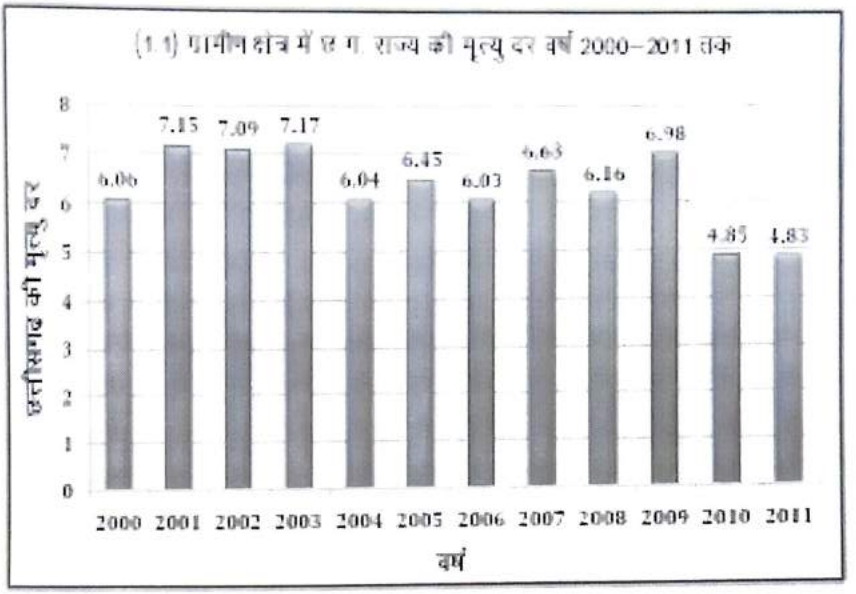

यदि शहरी क्षेत्र में संमको को देखने पर स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों में मृत्यु दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। जो एक चितंनीय विषय हैं। छत्तीसगढ़ निर्माण के समय जहाँ शहरी क्षेत्र में मृत्यु दर 5.15 प्रति हजार थी वह वर्ष 2011 में बढ़कर 7.40 प्रतिहजार हो गई है जबकि यदि 2000 से 2011 तक की छ.ग. की शहरी मृत्यु दर की वृद्धि दर देखे तो इसमें काफी उच्चावचन देखने को मिलता है। वर्ष 2001, 2004, 2005, 2007, 2010 में मृत्यु में वृद्धि हुई है, जबकि सभी वर्षो में मृत्यु दर में गिरावट आई है। सबसे ज्याद मृत्यु दर में गिरावट वर्ष 2006 में है।

(1.2) शहरी क्षेत्र में छ.ग. की मृत्यु दर वर्ष 2000-2011 तक

वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011
मृत्युदर शहरी क्षेत्र	5.75	8.85	5.79	5.63	7.16	7.37	6.57	7.41	7.25	7.30	7.50	7.40

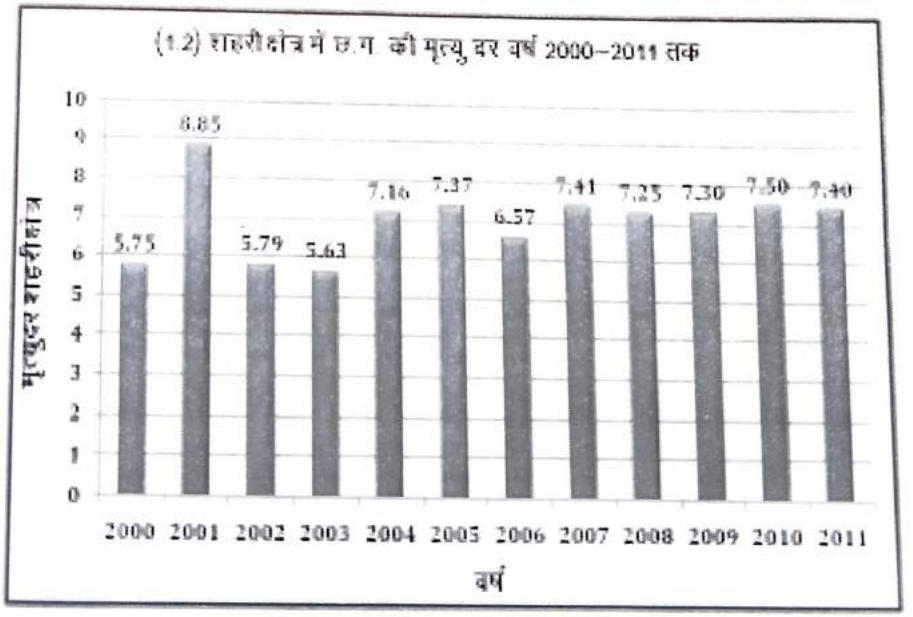

यदि छ.ग. की कुल मृत्यु दर का अध्ययन करें तो बात स्पष्ट होती है जहाँ छ.ग. राज्य स्थापना के समय 6.16 प्रतिहजार था वही 2011 में घटकर 5.89 प्रतिहजार हो गया है जो सराहनीय है।

लेकिन यदि छ.ग. की कुल मृत्यु दर की वृद्धि दर वर्ष 2000 से 2011 तक देखें तो इसमें काफी उच्चावचन है। वर्ष 2001 में जहाँ मृत्यु दर 11.85 प्रतिशत बढ़ा है वहीं 2002 में 2.90 प्रतिशत तक बढ़ गया है। फिर 2003 में इसमें मामूली वृद्धि 0.9 प्रतिशत की हुई है। आगे के वर्षो में देखें तो कुल मृत्यु दर में परिवर्तन कभी घटा है तो कभी बढ़ा हैं लेकिन सबसे अधिक वृद्धि दर वर्ष 2001 में 11.85 प्रतिशत है जबकि सबसे अधिक गिरावट वर्ष 2008 में 9.97 प्रतिशत है।

(1.3) छ.ग. की कुल मृत्यु दर (वर्ष 2000-2011)

वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011
छत्तीसगढ़ कुल मृत्यु दर	6.16	6.89	6.69	6.75	6.63	6.68	6.17	6.82	6.14	6.01	6.77	5.89

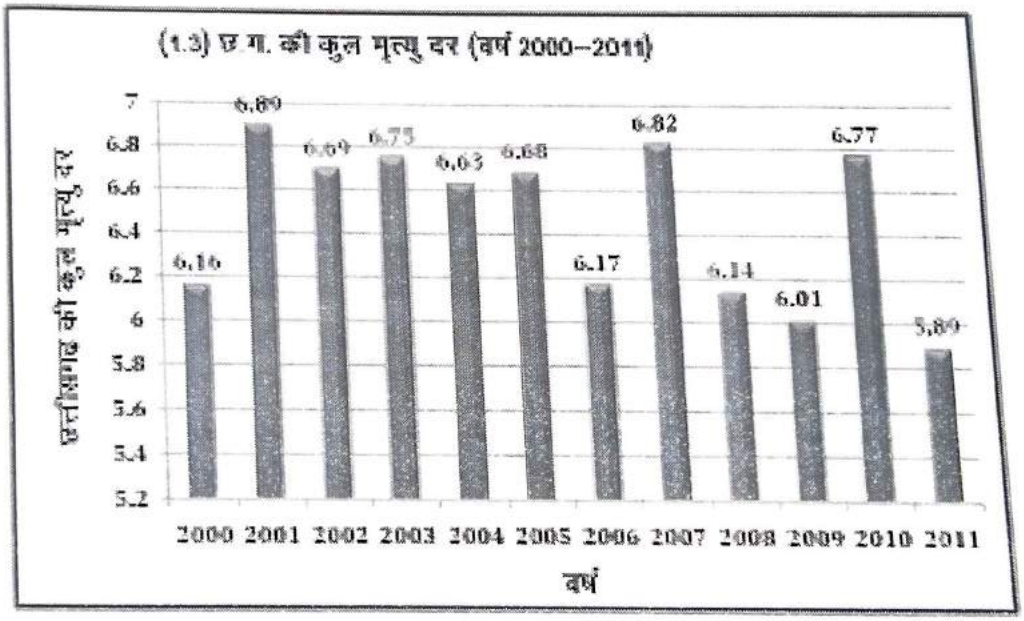

2. छत्तीसगढ़ राज्य की जन्म दर (2000-2011)- जन्म दर प्रति वर्ष एक हजार जनसंख्या के पीछे लोगों के जन्म की संख्या को बतलाती है। इस शोध-पत्र में छत्तीसगढ़ के स्थापना वर्ष 2000 से लेकर 2011 तक की जन्म दर में हुये उच्चावचनों का अध्ययन किया है जो निम्न प्रकार से है।

ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ जन्मदर राज्य स्थापना के समय 15.43 प्रति हजार था वहीं 2011 में घटकर 12.06 प्रति हजार हो गया है। लेकिन यदि छत्तीसगढ़ की ग्रामीण जन्म दर की वृद्धि दर देखे तो इसमें भी काफी उच्चावचन देखने मिल रहा है। जैसे वर्ष 2000, 2005, 2011 को छोड़कर बाकि वर्षो में जन्म दर में गिरावट दर्ज हुई है जो जनसंख्या

केदारनाथ सिंह के लोकोन्मुखी गीतों से एक मुलाकात — राधेश्याम बंधु — 152
अजातशत्रु की स्नेह-छाया में — रणजीत साहा — 158
कलकत्ता उन्हें बहुत पसंद था — निर्मला तोदी — 167
बहुत याद आते हैं केदार जी — शैलेन्द्र प्रताप सिंह — 170
क्या कहूँ आज जो नहीं कही — अनामिका — 176

घर परिवार में कवि केदार

अजातशत्रु केदार जी — ब्रह्मानंद सिंह — 178
यही हैं और यहीं रहेंगे — यशवंत कुमार सिंह — 181
हुसैन के साथ एक दिन — राजीव सिंह — 186
उठता हाहाकार जिधर है — सुबोध कुमार — 188
कहाँ मिलेंगे केदार नाना जी जैसे लोग? — आयुष सेंगर — 193

कृतियों में कवि केदार

कवि केदारनाथ सिंह की काव्य-शिल्प सजगता — दिविक रमेश — 194
केदारनाथ सिंह : समय और शब्द की पहचान — समीर कुमार पाठक — 202
कल्पना और छायावाद : एक जरूरी किताब — पुनीत कुमार राय — 208
गद्य की रंजकता और कवि केदार — पल्लव — 212
बातों में केदार — ललित श्रीमाली — 215
चिट्ठियों की पगडंडी — विनोद खेतान — 220

कवि का संसार

अभिनेता की जुबान और कविता की कहानी — जावेद अख्तर खान — 223
केदारनाथ सिंह की बात : होना रचना और रचनाकार के साथ! — पांडेय शशिभूषण शीतांशु — 233
प्रेम कविता लिखना मेरे लिए एक दुष्कर कार्य है : केदारनाथ सिंह — कमलानंद झा — 246
केदारनाथ सिंह उनकी कविता का जीवन-मूल्य — देवशंकर नवीन — 251
अपनी भाषा : अपने लोग — अनिल राय — 268

कसौटी पर कविता - एक कविता : एक आलोचक

माँझी के पुल में कहाँ है, माँझी! — प्रफुल्ल कोलख्यान — 276
बनारस शहर नहीं समास है — प्रफुल्ल कोलख्यान — 282
केदारनाथ सिंह और बनारस — आनंदवर्धन — 285
बनारस : आधा मंत्र में, आधा फूल में — प्रिया राय — 292
पचखियाँ फेंकता वसंत-सा बनारस... — सुमन केशरी — 295
नई कविता पर 'माँझी का पुल' — वेदरमण — 300

पुनीत कुमार गुप्त

कल्पना और छायावाद : एक जरूरी किताब

केदारनाथ सिंह हिंदी ही नहीं भारतीय कविता के भी महत्वपूर्ण कवि हैं। सधी-संयमित, सहज, आत्मीय भाव-भंगिमा-भाषा में रची गई उनकी कविताएँ सघन-गहन जीवन राग और मनुष्यता के आग्रह की असाधारण कविताएँ हैं। अपने लगभग 60 वर्षों के कवि जीवन में वह कविता के हर दौर और दशक में अग्रणी, अर्थवान और रचनात्मक ताजगी से परिपूर्ण बने रहें। हिंदी कविता में उनकी उपस्थिति बेहद सौम्य और सर्व स्वीकृत रही है। केदार जी मूलतः कवि हैं, अपनी माटी अपने लोग से गहरे जुड़े हुए कवि, महानगरीय जीवन के बावजूद गंवई मन-मिजाज लिए हुए कवि, बहुप्रतिष्ठित-बहुपुरस्कृत होने के बावजूद सहजता को सहेजे हुए और साधारण से संबंध सरोकार रखने वाले कवि। कविता के साथ-साथ उन्होंने आलो चना भी लिखी है। कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिंब विधान, मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत उनकी गद्य कृतियां है। स्वयं को वह कवि ही मानते हैं आलोचक नहीं। इसके बावजूद उनकी आलोचना अत्यंत समर्थ और सटीक रही है।

कल्पना और छायावाद उनका एम.ए. का डिजर्टेशन है। किन्तु इस प्रारंभिक रचना में एक विस्मयकारी प्रौढ़ता है। जिस समझ और स्पष्टता के साथ उन्होंने छायावाद के वैशिष्ट्य का उद्घाटन करते हुए कल्पना का सांगोपांग विवेचन किया है वह उनके आलोचकीय सामर्थ्य का प्रमाण है। कविता की जगह यदि उन्होंने आलोचना को अपना रचना क्षेत्र चुना होता तो वह किन उपलब्धियों एवं ऊँचाइयों तक गए होते, इस किताब के आधार पर इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। नामवर सिंह में एक बड़ा कवि होने-बनने की भरपूर काव्य-प्रतिभा लेकिन उन्होंने कविताई को खूँटी पर टाँग आलोचना को चुना। इसके उलट एक बड़ा आलोचक होने बनने की भरपूर उर्वरता होते हुए भी केदार जी ने कवि-कर्म को चुना। यदि नामवरजी कवि ही हुए होते और केदारजी आलोचक तब क्या स्थिति होती। खैर यह तो सिर्फ कल्पना और कयास की बात है। छठे दशक के अंतिम वर्षों में जब यह किताब लिखी गई थी उस समय तक कल्पना और बिंब को लेकर हिंदी में बहुत कम लिखा-पढ़ा गया था, यहां किताब उस अभाव की पूर्ति के तौर पर थी। फलतः कविता प्रेमियों और शोधार्थियों के लिए यह एक जरूरी किताब बन गयी। कल्पना, कल्पना और बिंब की परम्परता और पृथकता, छायावाद की परख के लिहाज से इस किताब की उपादेयता असंदिग्ध है। सैद्धांतिक और व्यवहारिक आलोचना के प्रीतिकर सम्मिश्रण से रची-बुनी गई यह किताब केदारजी की आगे आने वाली किताब 'आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान' (उनकी पी.एच.डी. का शोध-विषय) की पृष्ठभूमि की तरह है। केदारजी के रचनाकार की शुरूआत कल्पना और छायावाद से होती है। कल्पना छायावाद का प्राण तत्व रही है। केदारजी छायावाद पर मुग्ध रहे हैं और संयोग देखिए कि केदारजी का देहावसान छायावाद की शतवार्षिकी वर्ष में होता है। कभी-कभी कुछ संयोग जीवन और इतिहास को दिलचस्प बना देते हैं।

कल्पना का महत्व, कल्पना का स्वरूप, कल्पना का अर्थ, कल्पना का परिवेश, स्वच्छंद कल्पना, मध्य युगीन कल्पना और आधुनिक कल्पना, अंतर्दृष्टि और प्रातिभज्ञान, सम्मूर्तन विधान, प्रतीक-योजना, मिथ और कल्पना, कल्पना और ललित कल्पना-इन ग्यारह अध्यायों में विभक्त यह किताब कल्पना के आशय, आयाम एवं अर्थवत्ता को अभिव्यक्त करने का निष्ठापूर्ण प्रयास करती है। कल्पना संबंधी चिंतन की पाश्चात्य एवं भारतीय परम्परा को खँगालते हुए केदारजी कल्पना को रचना प्रक्रिया के अनिवार्य घटक के रूप में व्याख्यायित करते हैं। बिंब, प्रतीक, मिथ के स्वरूप का निर्धारण करते हुए वह इनसे कल्पना के संबंध की विवेचना ही नहीं करते मध्ययुगीन कल्पना और आधुनिक कल्पना के अंतर एवं छायावाद की कल्पना के वैशिष्ट्य एवं अपूर्वता का उद्घाटन भी करते हैं। कहना न होगा कि अपने संक्षिप्त कलेवर में भी यह अत्यंत सारगर्भिता किताब है।

कल्पना एक मानसिक क्रिया है, एक सर्जनात्मक व्यापार है, जो प्रत्यक्ष वस्तुओं-स्थितियों में उन चीजों-छवियों का नियोजन करती है, ऐक्य विधान करती है जो अप्रत्यक्ष-अदृष्ट हैं। वह अतीत को प्रत्यक्ष करती है और भावी को घटित दिखलाती है। कल्पना ही साहित्य को कोरा इतिहास-दर्शन जैसा न बनाकर उसे 'कुछ और अधिक' बनाती है। पश्चिम में जहाँ कल्पना संबंधी चिंतन की दीर्घ एवं समृद्ध परम्परा रही है। वहीं भारत में कल्पना संबंधी चिंतन की शुरूआत बहुत बाद में रविन्द्रनाथ से होती है। कल्पना पर हिंदी में महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा डॉ. नगेन्द्र ने विचार किया है। इनमें शुक्लजी का चिंतन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने काव्य के समस्त रूप विधान को कल्पना से जोड़ा है। पश्चिम में कल्पना संबंधी चिंतन की परम्परा प्लेटो से शुरू होकर रिचर्ड्स तक जाती है। प्लेटो कल्पना को असत्य, अस्तु विचारों को समंजस रूप देने वाली शक्ति, तो अंतर्दृष्टि एवं अभिव्यक्ति का मूल, पैरा सेलसस अतीन्द्रिय शक्ति, ह्यूम एक ध्वंसात्मक शक्ति, एडिसन काव्य विधायक तत्व मानते हैं। केदार जी कहते हैं कि कल्पना का विचार असत्य या भ्रम से आरंभ हुआ और विवेक, तर्क, अन्तर्दृष्टि, नैतिक कल्याण के मार्ग से होता हुआ अनुभूति की यथार्थ भूमि पर आकर ठहर गया। इनमें प्रत्येक शब्द एक-एक युग का सूचक है। कल्पना की प्रकृति के आधार पर छायावाद और रहस्य वाद को अलगाते हुए उन्होंने यह मत दिया है कि कल्पना जहां वस्तुजगत का आश्रय लेकर उड़ाने भरती है वहां छायावाद और जहां शुद्ध अंतर्दृष्टि के द्वारा निर्मित भाव लोक में संचरण करती है वहां रहस्यवाद। वह कल्पना, को एक रचनात्मक शक्ति मानते हैं जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर होती है। कलात्मक सृजन, रसास्वादन, भूत की भावना, भविष्य का अनुमान बगैर कल्पना के असंभव है। वह आत्मज्ञान के साथ-साथ वस्तुज्ञान भी कराती है और अनुभूति के सूत्र में 'आत्म' तथा 'पर' को जोड़ती है।

कल्पना के स्वरूप पर विचार करते हुए केदारजी कहते हैं कि वह मन की एक रचनात्मक क्रिया है। कल्पना के दो अर्थ होते हैं : 1. कलात्मक और 2. व्यवहारिक। कल्पना और स्मृति दोनों प्रत्यक्षज्ञान आधारित है। किंतु स्मृति मात्र अनुकरण है और कल्पना संभावना या विचार। स्मृति के आधार पर ही कल्पना की उड़ान संभव होती है किंतु स्मृति कल्पना, की सीमा नहीं है। वह आधार भूमि अवश्य है। कल्पना और प्रत्यक्ष पदार्थ को लेकर दार्शनिकों में मतभेद रहा है। कुछ ने कल्पना को सत्य माना है क्योंकि बाह्य वस्तु मानसिक धारणा के अतिरिक्त कुछ नहीं है। कुछ लोग प्रत्यक्ष पदार्थ को ही सत्य मानते है कल्पना को नहीं। स्वप्न मनुष्य के अचेतनावस्था की मानसिक काल्पनिक क्रिया है। जबकि कल्पना एक सचेत प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति भेद से कल्पना के भी कई भेद माने हैं–दृष्टि कल्पना, ध्वनि कल्पना, स्पर्श कल्पना, क्रिया कल्पना, घ्राण-कल्पना, रस-कल्पना। सृजनात्मक पक्ष की दृष्टि से कल्पना के तीन भेद है : 1. निष्क्रिय तथा सक्रिय कल्पना 2. धारणात्मक तथा रचनात्मक कल्पना। कल्पना का यह विभाजन मनोवैज्ञानिक आधार पर है। साहित्य में स्मृति, स्वप्न, दिवा स्वप्न–ये सभी कल्पना की ही परिधि में आते हैं। मनोविज्ञान की अपेक्षा साहित्य जगत की कल्पना का क्षेत्र अधिक व्यापक है। सृजन प्रक्रिया में कल्पना और ललित कल्पना दोनों की उपा देयता एवं भूमिका है। केदार जी का निष्कर्ष है, ललित कल्पना अंग है और कल्पना अंगी। दोनों में अंगांगि संबंध है। न तो ललित कल्पना के बिना कल्पना काव्य को अलंकृत कर सकती है, न कल्पना के बिना ललित कल्पना किसी कृति को सम्पूर्णता प्रदान कर सकती है।

कल्पना के कार्य-क्षेत्र के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद रहा है, कुछ न उसके कार्यक्षेत्र को

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

भाग - ८०, अंक - ४

अक्टूबर - दिसम्बर, २०१९

ISSN : 0378-391X

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी

१२ डी, कमला नेहरू रोड, प्रयागराज-२११००१ (उ.प्र.)

दूरभाष : ०५३२-२४०७६२५

website	:	http://hindustaniacademy.com
email	:	hindustaniacademyup@gmail.com
Facebook Profile name	:	hindustani academy allahabad
Twitter	:	hindustaniacademyup@gmail.com

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

शुल्क : **एक प्रति रु. ३०.००, वार्षिक : रु. १२०.००**

विशेषांक : रु. ५०.००

मुद्रक : **आस्था पेपर कन्वर्टर्स, प्रयागराज**

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

• गाँधी जी का स्त्री-विषयक दृष्टिकोण	डॉ० सरोज सिंह	...	१८८
• महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन व चिंतन की प्रासंगिकता	डॉ. संजय कुमार सिंह	...	१९३
• "गांधी : चिंतन और अहिंसा"	डॉ० संजय कुमार सिंह	...	१९८
• काव्य मानव अथवा मानव काव्य वामन में विराट् महात्मा गाँधी	डॉ. दादूराम शर्मा	...	२०१
• स्त्री शिक्षा और गांधी	ओम प्रकाश सिंह	...	२०४
• महात्मा गाँधी के विचारों का वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य पर प्रभाव	डा. रतन कुमारी वर्मा	...	२०९
• उर्दू साहित्य में महात्मा गांधी का प्रभाव	डॉ० अजय मालवीय	...	२१४
• गाँधी का रामराज्य : अवधारणा एवं प्रासंगिकता	डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी	...	२१८
• स्वदेशी का अर्थशास्त्र	डॉ. बद्री बिशाल त्रिपाठी	...	२२२
• गाँधी के धर्म संबंधी विचार	कृपा शंकर	...	२३०
• खादी, चरखा और गाँधी	डॉ० किरण शर्मा	...	२३४
• गाँधी समकालीन संदर्भों में	विवेक सत्यांशु	...	२३८
• गाँधी का सर्वोदय दर्शन	डॉ० श्रीप्रकाश सिंह	...	२४२
• गाँधी के विविध आयाम	डॉ. पूनम श्रीवास्तव	...	२४७
• हिन्दी भाषा के विकास में महात्मा गाँधी का योगदान	डा० प्रीति सिंह	...	२५१
• अफ्रीका में गाँधी	डॉ. रमेश सिंह	...	२५५
• गाँधी : भारतीय साहित्य और भाषा	नारायणी त्रिपाठी	...	२६१
• गाँधी और राष्ट्रभाषा हिन्दी	संजीव कुमार पाण्डेय	...	२६६
• गाँधी के राम	मीरा सिन्हा	...	२७०
• गांधी और किसान	अनन्त जौहरी	...	२७३
• मोहन से महात्मा तक-सत्य के प्रयोग	डॉ० जूही शुक्ला	...	२७६
• युवक-किशोर क्या करे?	सुगन बरंठ - माले गाँव	...	२७९
• "भारत ऐसा हो" कल्पना को संरक्षित एवं संवर्धित करने हेतु आह्वाहन!	प्रदीप खेलूरकर - मालेगाँव	...	२८२
• राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के १५० वें जन्मवर्ष पर प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक : एक विवरण	कृष्ण वीर सिंह सिकरवार	...	२८५
• महात्मा गाँधी के आध्यात्मिक-नैतिक दर्शन में शाकाहार का महत्व	सुष्मिता सिंह	...	२९१
• 'गान्हीं बाबा'	डॉ० पुनीत कुमार राय	...	२९६
• वैश्विक परिदृश्य में गाँधी की प्रासंगिकता	डॉ० अमिता पाण्डेय	...	३००
• एक गीत- बापू रहे हिमालय	जय कृष्ण राय तुषार	...	३०८
• देश प्रेम प्राण से प्यारा	बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'	...	३०९

32. भारत का अर्थात् और छायावादी कविता
डॉ. पुनीत कुमार राय ..... 234 - 237
33. छायावादी चतुष्टय कवियों के काव्य में राष्ट्रीयता
श्रीमती ममता रेवापाटी..... 238 - 245
34. राष्ट्र के प्रति समर्पित कवि : दिनकर
डॉ0 रेखा पतसारिया ..... 246 - 252
35. स्वप्निल श्रीवास्तव के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर
रणजीत कुमार वर्मा ..... 253 - 257
36. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के काव्य में राष्ट्रीयता
डॉ0 राजेश कुमार ..... 258 - 266

❖❖❖

Scanned by CamScanner

भारत का अर्थात् और छायावादी कविता

डॉ. पुनीत कुमार राय
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
अरूण प्रताप सिंहदेव शासकीय महाविद्यालय
शंकरगढ़, जिला-बलरामपुर (छ.ग.)
मो०:- 9977771846
Email:- puneetraibhu@gmail.com

एक राष्ट्र के रूप में भारत का अर्थापन, अन्तेषण 19 वीं-20वीं सदी के भारतीय नवजागरण का एक प्रमुख उद्यम रहा है। अपने उपनिवेशवादी हितों की पूर्ति के लिए जिस भारत को बिटिशों न नंग-धड़ंग साधुओं, सपेरों, नटों, असभ्यों का देश कहा था एवं गुलामी को जिसकी नियति माना था, उस भारत को नवजागरण के मनीषी जिस रूप में व्याख्यायित, परिभाषित करते हैं वह पश्चिम के राष्ट्र-राज्य से कहीं बढ़कर था। तत्कालीन पतन, पराभव, पराधीनता की परिस्थितियों के बीच एक ऐसे भारत का संधान किया जाता है जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत प्राचीन एवं सतत् प्रवहमान और सभ्यता की दृष्टि से अत्यन्त महान था। यह शाश्वत, मृत्युन्जय और चिन्मय भारत था। तत्कालीन दयनीय परिवेश में दिव्य भारत की यह अवधारणा नस्लीय श्रेष्ठता की औपनिवेशिक सैद्धांतिकी का प्रतिउत्तर ही नहीं बनती है अपितु देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज भी बनती है, फलतः जातीय स्वाभीमान जाग्रत होता है, स्वतंत्रता संग्राम परवान चढ़ता है। भारत का देवता और माता के रूप में रूपायन किया जाता है और राष्ट्रीयता एक धर्म के रूप में प्रसारित की जाती है। भारत एक राजनीतिक प्रत्यय नहीं है, यह एक वृहद सांस्कृतिक अवधारणा है। यही नवजागरण का निष्कर्ष था।

'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' (विष्णु पुराण) भारत की इतनी स्पष्ट समझ थी, अपने यहां किन्तु

Scanned by CamScanner

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

सम्पादक
उदय प्रताप सिंह

प्रबन्ध सम्पादक
अजय कुमार सिंह
पायल सिंह

सहायक सम्पादक
ज्योतिर्मयी

लोकनायक श्रीराम
विशेषांक
(द्वितीय खण्ड)

श्रावण-पौष, विक्रम संवत् २०७७
भाग - ८१, संयुक्तांक - ३, ४
जुलाई-दिसम्बर, २०२०

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
प्रयागराज

सरगुजा में श्रीराम

पुनीत कुमार राय

रघुकुल भूषण, सूर्यवंश शिरोमणि, दीन बंधु, करुणानिधान,सियापति, दशरथनंदन श्रीराम की गाथा भारतीयता का अमृत तत्त्व है। राम कथा क्या है भारतीयता ? भारतीयता के क्या प्रतिमान हैं, क्या प्रतिज्ञाएँ हैं ? यह सब कुछ यदि जानना-समझना हो तो रामकथा का अवगाहन कीजिए। कहना न होगा कि राम कथा भारतीयता को परिभाषित एवं व्याख्यायित करती है। जल में लवण की तरह यह कथा भारतीय जन-जीवन में, साहित्य-संस्कृति में घुली-मिली हुई है। रवीन्द्रनाथ ने ठीक कहा है कि भारत वर्ष रामायण में अपनी मनचाही चीज पाता है। मूल्य बोध, सौन्दर्य बोध, जीवन बोध का यह आसाधारण आख्यान हमारे लिए इतिहास से बढ़कर है, इतिहास से कहीं ज्यादा प्राणवान् और प्रेरक...। इस कथा की सत्यता-असत्यता को लेकर विद्वान् करते रहे माथापच्ची, तर्क-वितर्क। भारतवासी के लिए उसके अपने घर के लोग इतने सत्य नहीं हैं जितने कि राम, लक्ष्मण, सीता उसके लिए सत्य हैं।' (रवीन्द्र रचना संचयन, पृ०-६७३) सुदूर अतीत की यह गाथा क्या कभी विस्मृत हो सकेगी ? भारतवर्ष में क्या यह कथा कभी विलुप्त, अप्रासंगिक हो सकेगी ? कदापि नहीं, साधारण नहीं है यह कथा। यह तो हमारी अस्मिता का प्राणतत्त्व है, हमारी संस्कृति का स्रोत है । चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने बिल्कुल सत्य लिखा है, 'जब तक हमारी भारतभूमि में गंगा और कावेरी प्रवहमान हैं, तब तक सीता-राम की कथा भी आबाल, स्त्री-पुरुष सबमें प्रचलित रहेगी, माता की तरह हमारी जनता की रक्षा करती रहेगी।' (दशरथ नंदन श्रीराम, पृ०-७) 'रामो विग्रहवान धर्मः' राम धर्म के मूर्तिमान् स्वरूप हैं। वह धर्म जो जीवन को उच्चतर आशय प्रदान कर हमारे देवत्व को प्रकट करता है, वह धर्म जो धारण करने योग्य है। राम कथा मूलतः और अन्ततःशील की प्रतिष्ठा की कथा है और यह शील ही जीवन में, समाज में मंगल का विधान करता है। सचमुच रामकथा 'कलिमल हरनी मंगल करनी' है। विमल विवेक प्रदायिनी है, विषमता, विभ्रम का शमन करने वाली है। यह विपत्ति, बाधा, विफलता के नैराश्यपूर्ण दिशाहीन क्षणों में हममें सांत्वना एवं साहस का संचार करती है, मूल्यों को मृत होने से बचाती है। इसी कारण यह गाथा वाल्मीकि, कालिदास से लेकर गाँधी, लोहिया तक को प्रेरित, मुग्ध करती रही है। भारत वर्ष का प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक वर्ग-समुदाय प्रत्यक्ष-